NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

फसल विविधीकरण से ही होगी किसानों की आय दोगुनी

अरुण सोलंकी, ललित कुमार वर्मा एवं राजाराम यादव

परिचय:

वर्तमान समय में कृषि एक व्यापारिक कृषि बन चुकी है। बढ़ती जनसंख्या, शहरीकरण के फैलते विस्तार के कारण कृषि में विविधीकरण आज के समय में आवश्यकता बनकर उभरी है। वर्तमान समय में अब यह आवश्यक हो गया है कि कृषि एवं कृषि से जुड़े व्यवसाय के भरोसे टिकी 67 से 70 प्रतिशत जनसंख्या को जीवन-निर्वाह (livelihood) के लिये कृषि के पुराने तर्ज को छोडक़र नये तौर-तरीकों को अपनाना होगा, जिससे उनका आर्थिक उत्थान हो सके। खरीफ अथवा रबी की फसल की बुवाई, कटाई, भूमि, जलवायु, वर्षा का अनुमान लगाना आज के समय में इतने से काम चलना संभव नहीं है। किसानों की आय दुगनी करने के लिए फसल विविधिकरण (crop diversification) को अपनाना होगा। पारम्परिक फसलों की जगह मुनाफे वाली फसलें जैसे- बागवानी, मसाला फसलें, औषधि फसलें, सब्जी, फूल एवं फलों की खेती, वानिकी आदि का समावेश कुछ रकबे में किया जाना जरूरी हो गया है। खेती के साथ -साथ खेती से प्राप्त बेशुमार कीमती अवशेषों का समुचित उपयोग भी इस पद्धति का उद्देश्य है खेती के साथ पशुपालन तो मानो सदियों से जुड़ा एक महत्वपूर्ण कार्य है। बीच में मशीनीकरण के चलते जरूर इस दिशा में कुछ शिथिलता आयी थी लेकिन जैविक खेती की संजीवनी के साथ पुन: वापस आने लगी है, मशरूम की खेती बिल्कुल कम लागत में खेत के एक कोने में भी की जा सकती है। इसके अतिरिक्त खेत पर खुले में पड़ी थोड़ी सी भूमि का सद्उपयोग मधुमक्खी पालन के रूप में किया जा सकता है। प्राय:जिसके लिए कम लागत एवं कम आय के निवेश की आवश्यकता होती है। शहद और इसके उत्पादों की बढ़ती मांग के कारण मधुमक्खी पालन एक लाभकारी एवं आकर्षक व्यवसाय के रूप में उभर रहा है। परिणामस्वरूप यह कहा जा सकता है कि किसानों की आय दुगनी करने के लिए फसल विविधिकरण एक सर्वोत्तम विकल्प है।

सतत उत्पादन के लिए कृषि में फसल विविधीकरण एक नया पैटर्न है। फसल विविधीकरण का अर्थ है कि पारम्परिक रूप से उगायी जाने वाली कम लाभप्रद फसलों के

अरुण सोलंकी (सह-आचार्य एवं विभागाध्यक्ष), **ललित कुमार वर्मा** (शोध छात्र), कृषि अर्थशास्त्र विभाग, जनता वैदिक कालिज, बड़ौत, बागपत (उ० प्र ०)-250611

राजाराम यादव (सहायक आचार्य एवं विभागाध्यक्ष), कृषि सांख्यिकी विभाग, जनता वैदिक कालिज, बड़ौत. बागपत (उ० प्र ०)-250611

स्थान पर अधिक लाभप्रद वाली फसलों को उगाने से है। व्यवसायिक फसलों एवं अन्य कृषि से जुड़े व्यवसायों की ओर विविधीकरण का विचार ना केवल हमारे देश में बल्कि सभी विकासशील देशों के लिये एक आवश्यकता बन कर उभरा है। ताकि कृषि आमदनी/आय में बढ़ोत्तरी की जा सकें तथा एकल फसल उत्पादन के खतरे से भी बचा जा सके। आमतौर पर देखा गया है कि मानसून में भारी परिवर्तन हो रहे है, उससे निपटने के लिये कृषि में यदि विविधीकरण का विस्तार हो जाये तो मानसून द्वारा प्रायोजित खतरों से सरलता से निपटा जा सकता है साथ ही एक इकाई क्षेत्र से अधिक आय प्राप्त करने का साधन भी बढ़ाया जा सकता है।

खाद्यान्न फसलें गेहूं, धान में हरितक्रांति प्राप्त करने के बाद से कृषि विविधीकरण उभर कर आया है। सतत कृषि तकनीक का विकास एवं विस्तार से कृषकों में एक जागृति पैदा हो चुकी है और वे परम्परागत फसलों के स्थान पर फल/सब्जियाँ, फूल, औषधि एवं मसाला फसलें, मशरूम उत्पादन, पशुपालन, मधुमक्खी पालन तथा मत्स्य पालन में विश्वास करके आगे बढ़ रहे हैं। इस विविधीकरण क्रिया को बढ़वा देने में केंद्र तथा राज्य सरकारों द्वारा प्रायोजित योजनाओं से तथा राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड द्वारा किसानों को विभिन्न प्रकार की सुविधाएँ दी जा रही है। देश की नाबार्ड जैसी संस्थान का योगदान कृषि क्षेत्र में विविधीकरण लाने के लिये एक मील का

चित्र-1 : फसल विविधीकरण के अंतर्गत गन्ने के साथ सहफसली खेती

पत्थर साबित हुआ है। जिसमें कृषकों को सस्ती ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध कराया जाना भी शामिल है। इन सभी प्रयासों के सुखद परिणाम सामने हैं।

चित्र-2 : फसल विविधीकरण के अंतर्गत सरसों की खेती

किसानों को विविधीकरण खेती के लिए प्रेरित किया जा रहा है इससे किसानों की आय को दोगुनी किया जा सके। जिसके लिए केंद्र तथा राज्य सरकारों द्वारा किसानों के लिए **फसल विविधीकरण कार्यक्रम** (Crop Diversification Programme) की शुरुआत की गयी है। इस योजना के तहत किसानों को गेहूं और धान के अलावा अन्य फसलों की खेती करने को प्रोत्साहित किया जा रहा है। प्रोत्साहित किए जाने के तहत उन्हें सहायता भी प्रदान की जाएगी। इस योजना का उद्देश्य किसानों को कम मेहनत में अधिक पैदावार को बढ़ावा देना है, जिससे किसानों की आय दोगुनी की जा सके जैसे कि धान की खेती में काफी मेहनत लगती है, साथ ही पानी और पैसा (लागत) खेती करने में ज्यादा लगता है लेकिन पैदावार कम होती है। इसलिए अब किसानों को धान की खेती के स्थान पर दाल या अन्य फसलों की खेती के लिए सरकार प्रेरित कर रही है जिससे किसान कम मेहनत तथा कम लागत मे आधिक उपज और अधिक मुनाफा प्राप्त कर सके। इस योजना के तहत गेहूं अथवा धान के अलावा वे फसलें जो न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) के दायरे में नहीं आती है उन्हें शामिल किये जाने का विचार भी किया जा रहा है।

फसल विविधीकरण में अधिक लाभ कमाने के उपाय:

फसल विविधीकरण में अधिक लाभ कमाने के लिए किसान निम्न प्रमुख कार्य कर सकते हैं-

1. कम मूल्य की अपेक्षा अधिक मूल्य वाली फसलों जैसे- सब्जियां, फल, पुष्प, औषधि एवं मसाला फसलों, आदि की खेती करना।
2. अधिक पानी चाहने वाली फसलों की अपेक्षा कम पानी चाहने वाली प्रतिरोधी फसलों एवं प्रजातियों की बुबाई या रोपाई करना।
3. एक फसल से बहुफसली खेती करना जिसमें एक फसल से फार्मिंग सिस्टम एप्रोच करना जैसे- फसल उत्पादन के साथ पशुपालन/मत्स्य पालन/मधुमक्खी पालन कार्य करना।
4. कृषि उत्पादन से प्रसंकरण एवं मूल्य संवर्धन के साथ उत्पादन करना।
5. मिश्रित खेती/इंटरक्रापिंग खेती करना।

1. परंपरागत प्रणाली के स्थान पर फसल विविधीकरण प्रणाली को अपनाने से कुल उत्पादन में वृद्धि होगी।
2. फसल विविधीकरण प्रणाली अपनाने से किसानों की आय मे वृद्धि होगी।
3. फसल विविधीकरण प्रणाली में संसाधनों का समुचित उपयोग होता है।
4. भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ती है अर्थात अधिक समय तक उस भूमि पर खेती की जा सकती है।
5. फसल विविधीकरण से रोजगार के अवसरों में बढ़ोतरी होगी।
6. फसल विविधीकरण प्रणाली के तहत सतत कृषि का विकास हो सकता है।

चित्र-3 : आम के बगीचे में मधुमक्खी पालन

फसल विविधीकरण को अपनाने से होने वाले लाभ: फसल विविधीकरण को अपनाने से किसानों को अनेकों लाभ होते हैं। जो इस प्रकार हैं-

7. फसल विविधीकरण प्रणाली में विविध प्रकार की फसलें उगायी जाती है,इसलिए जोखिम एवं हानि की संभावना कम रहती है। फसल विविधीकरण से पर्यावरण में सुधार होता है।

फसल विविधीकरण की कमी के लिए उत्तरदायी कारक:

कृषि अर्थशास्त्र विभाग, जनता वैदिक कॉलिज, बड़ौत द्वारा बागपत जिले मे फसल विविधीकरण के कम होते कारणों का पता लगाने के लिये किये गये सर्वेक्षण में पाया गया कि जिले में किसान विविधीकरण प्रणाली के बजाय एक विशेष फसल प्रणाली के रूप में विशेष फसल के तौर पर गन्ना उगना पसंद कर रहे है। जांच में पाया गया कि किसान गन्ने की फसल के साथ उड़द एवं मक्के की फसल लेना पसंद करते थे लेकिन जंगली जानवरों इन दोनों फसलों काफी नुकसान करने लगें। जिसके कारण गन्ने की फसल को भी हानि पहुंचती थी। जिससे किसान धीरे- धीरे इन फसलों को उगाना कम करने लगें। हालाकि जिले के बरनावा, संतनगर, मविकला, मवीखुर्द, पुरा महादेव, बुढ़सैनी, कमाला, बरसिया, लुहारा, एवं गौसपुर सहित कई ऐसे गांव हैं, जिनमें गन्ने की फसल के साथ गेंदा की खेती सहफ़सली तौर पर की जा रही है। जिले में खासकर छोटे किसान गन्ने की फसल को छोड़कर फूलों की खेती की तरफ रुख कर लिया है। इसका एक कारण यह भी है कि गन्ने की खेती में लागत ज्यादा आती है और जिले में किसान को गन्ना भुगतान के लिए सालों इंतजार करना पड़ता है जबकि छोटे किसान को अपने जीवन निर्वाह के लिए रुपयों की आवश्यकता होती है। जबकि गेंदा फूल की फसल का दाम हाथों-हाथ मिलता है जिस कारण छोटे किसान फूलों की खेती की तरफ आकर्षित होने लगे हैं। पहले साल की फसल, यानि की पौधा के साथ अधिक लाभ कमाने के लिए गेंदा फूल की सहफसली खेती करते है। करीब तीन माह की फूल की फसल से किसानों को लाभ मिलता है। जबकि गन्ने को कोई नुकसान नहीं है साथ ही गन्ने की पैदावार एवं कटाई में जो खर्च आता है, वह फूल से पूरा कर लिया जाता है। लेकिन जिले में फूलों की कोई स्थानीय बाजार ना होने से किसानों को फूलों के विपणन में समस्याओ का समाना करना पड़ रहा है फिलहाल जो किसान फूलों की खेती कर रहे है उन्हें फूलों के विपणन के लिए दिल्ली या हरियाणा जाना पड़ता है। पिछले दो सालों में कोविड-19 महामारी के कारण लॉजिस्टिक्स चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा था। जिस कारण से यहाँ के किसान अन्य लाभप्रद फसलों की खेती करने मे संकोच करते है।

सर्वेक्षण से पता चलता है कि जिले में फसल विविधीकरण के कम होने के प्रमुख कारणों में, स्थानीय बाजार की अनुपलब्धता, प्रसंस्करण सुविधा का अभाव तथा उचित भंडारण की सुविधा न होना आदि प्रमुख कारण है।

फसल विविधीकरण में आने वाली चुनौतियां: किसानों को विविधीकरण को अपनाने मे कई कई महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जो निम्न प्रकार है-

1. देश का अधिकांश फसली क्षेत्र (cropped area) का पूरी तरह से वर्षा पर निर्भर होना।
2. उन्नत किस्मों के बीजों की अपर्याप्त आपूर्ति ।
3. भूमि तथा जल संसाधनों जैसे संसाधनों का उप-इष्टतम और अति-उपयोग, जिससे पर्यावरण और कृषि की स्थिरता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
4. अत्यंत अशक्त कृषि आधारित उद्योग।
5. अनुसंधान-विस्तार-किसान संबंध में अभाव।
6. अधिकांश फसली पौधों को प्रभावित करने वाले विभिन्न प्रकार के रोग एवं कीट।
7. उद्यानिकी फसलों के लिए खराब डेटाबेस।
8. पिछले कुछ वर्षों में कृषि क्षेत्र में निवेश में कमी।
9. लॉजिस्टिक्स चुनौतियां

निष्कर्ष:

वर्तमान समय में, फसल विविधीकरण को काफी महत्व प्राप्त हो रहा है। किसानों की आय दुगनी करने के लिए फसल विविधिकरण एक सर्वोत्तम विकल्प है। हालाँकि ऐसी चुनौतियाँ हैं जिन्हें नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता है, लेकिन फसल विविधीकरण किसानों की आय दोगुनी करने तथा राष्ट्र को खाद्य सुरक्षा संपन्न बनाने का एक अवसर प्रदान करता है। इसलिए सरकार को गेहूं और चावल के अलावा अन्य उत्पादित फसलों को न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) पर खरीद कर फसल विविधीकरण को बढ़ावा देना चाहिए। देश में खेती योग्य भूमि को बढ़ाना असंभव है परंतु अन्य संसाधन जैसे विशाल समुद्रीय तटों पर मछली पालन, फल/फूल का प्रोसेसिंग, मशरूम उत्पादन, तथा मधुमक्खी पालन आदि नवीन कार्यों से इस दिशा में प्रगति करने की अपार संभावनाएँ है।